कश्मीर में हिन्दी का विकास एवं वर्तमान स्थिति

हुमैरा यूसुफ़

सार - प्रस्तुत आलेख में कश्मीर में हिन्दी के उद्भव एवं विकास पर चर्चा की जाएगी। कश्मीर में हिन्दी की वर्तमान स्थिति क्या है और भूतकाल में इसकी स्थिति क्या रही है,इसका क्रमबद्ध रूप से अध्ययन किया जाएगा और यह स्पष्ट करने का भी प्रयास किया जाएगा कि कश्मीर जैसे अहिन्दी क्षेत्र में हिन्दी के पठन-पाठन की क्या दशा है।

भूमिका- 14 सितंबर 1949 ई. में हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकृति मिली, संविधान के भाग 17, अनुच्छेद 343-351 तक राजभाषा के सम्बंध में व्यवस्था की गयी। इसी तिथि को स्मरणार्थ बनाने के उद्देश्य से 14 सितंबर को संपूर्ण देश में हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

भारतीय भाषाओं में हिन्दी ही एक एसी भाषा है जिसे राष्ट्रीय भाषा के रूप में अपनाया जा सकता है। यह विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोले जानी वाला भाषा है, इसके बोलने-समझने वालों की संख्या लगभग 70 करोड़ है।"सन1999 में मशीन ट्रांसलेशन शिखर बैठक में टोकियो विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर होजुमि तानाका ने जो आँकडें प्रस्तुत किए उनके अनुसार विश्व में चीनी बोलने वालों का प्रण्यक स्थान है द्वितीय पायदान पर हिन्दी और तृतीय पायदान पर अंग्रेज़ी भाषा है।"[1]

आरम्भ- जम्मू-कश्मीर एक केंद्र शासित प्रदेश है। 5 अगस्त 2019 तक यह एक राज्य था जिसके दो भाग कर दिए गए, जम्मू-कश्मीर और लद्दख। जम्मू-कश्मीर हिमालय पर्वत श्रृंखला के सबसे ऊंचे हिस्सों में स्थित है। ब्रिटिश भारत में यह एक स्वतंत्र शाही रियासत हुआ करती थी। अखंड भारत के विभाजन के बाद यह पाकिस्तान, चीन और भारत के बीच लगातार विवाद का विषय बना हुआ है। तीनों ही देश विभिन्न हिस्सों पर अपना नियंत्रण रखे हुए हैं। यह आलेख भारत के हिस्से वाले कश्मीर में हिन्दी की स्थिति को केंद्र में रख कर बात करेंगे।

कश्मीर के संदर्भ में बात करे तो यह एक अहिन्दी भाषी क्षेत्र है, संभाषण के लिए यहाँ के लोग कश्मीरी का उपयोग करते है जो इनकी मातृभाषा है,उर्दू का भी व्यापक प्रयोग होता है जो यहाँ की राजभाषा है।

विकास- कश्मीर विश्व-प्रसिद्ध संस्कृत भाषा का शिक्षा केंद्र रहा है।विष्णु शर्मा, नागसेन, भामह, आनंदवर्धन, अभिनवगुप्त, क्षमेंद्र आदि जैसे प्रमुख आचार्य कश्मीर निवासी रहे है। यहाँ भारतीय काव्यशात्र तथा शैवमत परम्परा का जन्म हुआ है।

कश्मीर में हिन्दी कई शताब्दियों से है ।इस्लाम के आगमन से पूर्व बोली जाने वाली कश्मीरी में वैदिक तथा संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव दोनों प्रकार के शब्द पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं, किन्तु कश्मीर में हिन्दी कब से है इसकी सही तिथि बताना कठिन है। "मध्यकालीन भक्ति-आंदोलन ने सम्पूर्ण भारत को प्रभावित किया था इसका प्रभाव जम्मू कश्मीर पर पड़ना भी स्वाभाविक था इस प्रभाव के फलस्वरूप कश्मीर के कई कवियों ने भक्तिपरक कविताएं हिन्दी में भी रची।इस प्रसंग में कश्मीर की संत कवयित्री रूप भवानी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने कश्मीरी के साथ-साथ हिन्दी में भी भक्तिपूर्ण कविताएं लिखी हैं। कश्मीर के एक और भक्त कवि परमानंद ने अपने कई कश्मीरी रचनाओं में हिंदी के कुछ अंश जोड़े, उनकी भाषा में ब्रज, खड़ी-बोली पंजाबी तथा कश्मीरी का विचित्र मिश्रण है। यह 'भाखा' नाम से जानी जाती है।18 वीं शती में लक्ष्मण जू 'बुलबुल' ने कुछ कविताएं हिन्दी में लिखी जिनमें हिन्दी के साथ-साथ कश्मीरी दोनों भाषाओं का योग है"[2]। 19वी शताब्दी में कश्मीर के लाल जी जाडू,कृष्ण जू राजदान, पंडित नीलकंठ शर्मा,हलदर जू ककरू आदि जैसे कवियों ने हिन्दी कविताएँ रची हैं। यह कविताएँ भक्ति धर्म और नीति की भावनाओं से ओतप्रोत हैं।'लाल जी जाडू' ने हिन्दी से परिपूर्ण महाकाव्य लिखा है जिसमें दोहा, चौपाई,सोरठा आदि छंदों का प्रयोग मिलता है।

"महाराजा रणवीर सिंह के समय पहली बार कश्मीर में हिन्दी को सरकारी संरक्षण मिला उनके दरबारी कवि नीलकंठ ने 'रणवीर प्रकाश' नामक हिन्दी ग्रंथ लिखा। महाराजा प्रताप सिंह ने सरकारी भाषा उर्दू और न्यायालय की भाषा फारसी को स्वीकार किया और शिक्षा संस्थानों के पाठ्यक्रम सूची में हिन्दी को भी एक विषय के रूप में स्वीकृति मिली इस प्रकार हिन्दी ने राज्य में अपनी जड़ें पकड़ना आरम्भ किया।"[3]

1940 में तत्कालीन शिक्षा निर्देशक ख़्वाजा ग़ुलाम सैयददेन ने सरल उर्दू को फारसी और देवनागरी लिपि में शिक्षा देने का माध्यम स्वीकार किया, जिससे हिन्दी को कश्मीर में जड़े फैलाने में आसानी हुई, यह समय महाराजा हरि सिंह के शासन काल का समय था। "स्वतंत्रता से पूर्व कश्मीरी में सनातन धर्म सभा,आर्य सभा, कश्मीरी हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हिन्दी साहित्य सभा, हिन्दी परिषद आदि संस्थाओं का कश्मीर में हिन्दी को पुष्ट करने में योग रहा है पत्र-पत्रिकाओं की यदि बात करें तो 'साप्ताहिक महावीर' और 'चंद्रोदय' नामक पत्रिकाओं का भी बहुत योगदान रहा है।"[5] इसी प्रकार कश्यप नामक पत्रिका के माध्यम से कश्मीर के कवि, साहित्यकारों को अपने भीतर के साहित्यकार को उभारने का अवसर प्राप्त हुआ। सूचना विभाग से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'योजना' का भी हिन्दी के विस्तार में अत्याधिक योगदान रहा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कश्मीर में हिन्दी के प्रचार- प्रसार को एक नई गति मिली। हिन्दी अपनी लोकप्रियता के कारण राष्ट्रभाषा कहलाने लगी।1990ई के प्रारम्भ में विस्थापन की त्रासदी के समय कई कश्मीरी पंडितों को घाटी से विस्थापित होना पड़ा, जिससे कि कश्मीर में लिखे जाने वाले हिन्दी-साहित्य

पर तो प्रभाव पड़ा ही साथ ही कश्मीर में हिन्दी भाषा की स्थिति भी धीमी पड़ गयी । इसके पश्चात कुछ समय बाद स्थिति में सुधार आना आरम्भ हुआ और पून: हिन्दी का प्रसार आरम्भ हुआ।

स्थिति- कश्मीर का प्राचीन काल से ही देश के अन्य क्षेत्रों से आर्थिक तथा सांस्कृतिक संबंध रहे है। कश्मीर की खूबसूरत वादियों में भ्रमण के लिए देश के कोने-कोने से पर्यटक यहाँ आते रहे हैं। इसके अतिरिक्त भौतिक व सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए भी लोगों का आना यहाँ लगा रहता है।वार्षिक अमरनाथ यात्रा और खीर-भवानी के लिए भी कश्मीर प्रसिद्ध है। यहाँ के जिज्ञासू विधार्थयी भारी संख्या में देश के विभिन्न विद्यालयों ,महाविद्यालों और विश्व-विद्यालयों में शिक्षा प्राप्ति हेतु जाते रहे हैं, कश्मीरी व्यवसायी शीत काल में कश्मीरी शवाल बेचने के उद्देश्य से देश के विभिन्न प्रांतों में जाते रहे हैं। यहाँ के हस्तशिल्पी,मज़दूर,और युवा आर्थिक कारणों से विभिन्न राज्यों में जाते रहे हैं। इन्हीं सब कारणों से हिन्दी भाषा कश्मीरवासियों के लिए देश के अन्य क्षत्रों से सम्पर्क की भाषा बहुत पहले से बनी हुई है। इस के अतिरिक्त हिन्दी सेनिमा, दूरदर्शन, रेडियो आदि का भी हिन्दी को कश्मीर के साथ जोड़ने में योगदान रहा है ।इस तथ्य को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है कि यहाँ के लोग उर्दू का प्रयोग अधिक करते हैं और हिन्दी-उर्दू की आपसी निकटता होने कारण कश्मीरियों को हिन्दी को समझने और अपनाने में खास कठनाई नहीं होती है।

वर्तमान समय में यदि कश्मीर के विद्यालयों पर दृष्टि डालें तो अधिकतर उर्दू भाषा का ही अधिक प्रचलन है परंतु इसके उपरांत कई स्कूलों ने अपने पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा का पठन-पाठन आरम्भ किया है, जिससे कश्मीर घाटी में हिन्दी भाषा को बढ़ावा मिलने का सुआवसर प्राप्त हुआ है। कश्मीर के महाविद्यालयों में हिन्दी विषय को पढ़ाने की व्यवस्था है। कश्मीर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से अभी तक हज़ारों छात्र-छात्राएँ स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त कर चुके है। "विभाग ने अभी तक 65 एम.फिल और 75 पीएच.डी हिंदी जगत को भेंट किए हैं"[5], जिनमें अधकतर शोधार्थी कश्मीरी निवासी है। इसके अतिरिक्त अन्य राज्यों से भी विद्यार्थी हिन्दी विभाग से एम.फ़िल,पीएच.डी आदि के लिए आने लगे है। विभाग की ओर से हिंदी-डिप्लोमा सर्टिफिकेट कोर्स चलाया जाता है इसमें हर साल लगभग 15 लोगों को हिन्दी क,ख,ग... से सिखाई जाती है, जिस से अहिन्दी भाषी भी हिंदी पढ़ना और लिखना सीखते हैं।

सरकार द्वारा संस्थापित कल्चरल अकैडमी ने भी हिन्दी भाषा में कई ग्रंथ प्रकाशित करवाए हैं साथ ही कई लेखकों की कृतियों को प्रकाशित कराने में आर्थिक सहायता भी करते है। रेडियो कश्मीर श्रीनगर पर भी हिन्दी भाषा के कार्यक्रम चलते हैं। जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश होने के बाद यहाँ के कार्यालयों में हिन्दी आवश्यक हो गई है। केंद्र से कोई पत्र आ जाए या यहाँ से कोई पत्र भेजना हो तो उसे हिन्दी में अनुवाद करना

आवश्यक बन गया है जिससे कि हिन्दी को पढ़ना और समझना कर्मचारियों तथा अन्य लोगों के लिए भी आवश्यक बनता जा रहा है।

रोजगार के क्षेत्र में यहां के हिन्दी जानने वालों को रोजगार पाने के अवसर बढ़ते जा रहे हैं जैसे- अनुवादक,अध्यापक,हिंदी टाइपिस्ट आदि, जिसके कारण हिन्दी बहुत से विद्यार्थियों को अपनी ओर आकर्षित करने लगी है। आज कई माता-पिता अपने बच्चों के लिए वह विद्यालय चुनते हैं जिसमें हिन्दी भी पढ़ाई और सिखाई जाती हो। वर्तमान समय में कश्मीर के कई हिन्दी लेखक साहित्य सेवा में लगे हुए है जैसे- क्षमा कौल,अग्निशेखर(कुलदीप सुम्बली),निदा नवाज़, शशि शेखर तोशखानी,महाराज कृष्ण संतोषी,शिबन कृष्ण रैना,सतीश विमल,डॉ.मुदस्सिर अहमद भट्ट आदि। इन लखकों के फलस्वरूप कश्मीर में हिन्दी कविता,कहानी,उपन्यास,आलोचना,नाटक जैसी विधाएँ उभर कर सामने आई हैं।

निष्कर्षत: कह सकते है कि यह सत्य है कि कश्मीर में पहले हिन्दी पढ़ने और पढ़ाने का इतना प्रचलन नहीं था पर अब हिन्दी को जानने पढ़ने वालों की संख्या पर्याप्त हो गई है। कारण कोई भी हो पर यह संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है आगे आने वाले समय में कश्मीर घाटी में हिन्दी भाषा का भविष्य निश्चित रूप से उज्जवल ही है।

संदर्भ-

1.कुमारी नरेश, *"न्यू मीडिया में हिन्दी भाषा के प्रभाव: एक अध्ययन"*. इण्डिया जर्नल ऑफ़ सोशल कन्सरंज़,vol11,issue47,apr-june 2022, पृष्ठ न.96

2.नव भरती , *"जम्मू-कश्मीर में हिंदी"*, जम्मू व कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ़ स्कूल एजुकेशन, पृष्ठ न.15

3. वही, पृष्ठ.16

4. वही, पृष्ठ.18

5.https://preciouskashmir.com/2022/09/15/ku-celebrates-hindi-divas-with-fervor-vc-chairs-inaugural-ceremony/

हुमैरा यूसुफपी.एच.डी
शोधार्थी
कश्मीर विश्विद्यालय